

ॐ नमः श्री जगदम्बायै \*

ॐ विश्वेश्वरी निखिल देव महर्षि पूज्या,

सिंहासना त्रिनयना भुजगोपवीता ।

शङ्खान्बुजास्यऽमृत कुम्भक पञ्च शाखा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१॥

\* भाष \*

जगत ईश्वरी छि यसदीव यर्ष सारी पूजान् ,

सूह आसनस सरूप नाल्य त्र्यन्यत्रछय दारान् ।

अथि छुस खडग अमृत नूट शङ्ख पदम आसान् ,

राज्ञा द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठय ॥१॥

जन्माटवीप्रदहने

दववहि भूता,

तत्पाद पङ्कजरजोगत चेतसां या ।

श्रेयोवतां सुकृतिनां भवपाश भेत्री,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रमुखा ॥२॥

\* भाष \*

इमज्जन चरण छि अमि सुन्दि मनि मग्ग दारान् ,

जग्म वन वनिथ अग्नी छख लादि जालान् ।

भक्तयन इमन युसू वन्दन संसार चटान् ।

राज्ञा द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठय ॥२॥

देव्या ययादनुज राक्षसदुष्टचेतो,

न्यगभाषितं चरणनूपुरशिञ्जितेन ।

इन्द्रादिदेवहृदयं प्रविकासयन्ती,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥३॥

\* भाष \*

यमि दीविये असुर दानव दुष्ट महान् ,

रुजि पादनूय तल रटिथ श्वन्नि युस सपनान् ।

इन्द्राज्ञ व्ययि ति दीवन हृदयस सु फलवान् ,

राज्ञा द्वहय भगवती रुजिन प्रसन्न पाठय ॥३॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ( ६ ) ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दुःखार्णवे हि पतितं शरणागतं या,

चोद्धृत्य सा नयति धाम परं दयाविध ।

विष्णुर्गजेन्द्रमिव भीत भयापहर्त्री,

राज्ञी सदा भगवती भक्तु प्रसन्ना ॥४॥

\* भाष \*

शरणागतन तू एमूत्यन यूस दुःख छु आसान् ,

सुय दुःखकरानल्लय मनि दूर म्बुकी छि दिवान ।

भय मन्जूरल्लान युथ रल्लान हस्त व्यण्ण भगवान् ,

राज्ञी द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठय ॥४॥

यस्या विचित्रमखिलं हि जगत्प्रपञ्चं ,

कुक्षौ विलीनमपि सृष्टिविसृष्टिरूपात् ।

आविर्भवत्यविरतं चिदचित्स्वभावं ,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥५॥

\* भाष \*

युसू सौर जगत रंगू रंगू स्थावर जङ्गम रूप,

तस मन्त्र बन्धि सू आसान उत्पत प्रलय रूप ।

व्ययि सुय तिथूय लु नेरान युद ओस प्रलय रूप,

राज्ञा ब्रह्म भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठय ॥५॥



यत्पादपङ्कजरजःकणज

प्रसादा,

द्योगीश्वरैर्विगतकल्मषमानसैस्तत् ।

प्राप्तं पदं जनिविनाशहरं परं सा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

\* भाष \*

यमि सून्जि पादगदि सूत्य योगी श्वरव मन ,

मल तथ छुलुख अदू च्छयुनुख ज्योन मरन बन्धन ।

प्रसाद वन्योख परम धाम प्रोवुख छि रोजान् ,

राज्ञा द्वहय भगवती रुजिन प्रसन्न पाठ्य ।

यत्पादपङ्कजरजांसि मनोमलानि,

संमार्जयन्ति शिवविष्णुविरिञ्चि देवैः ।

मृगयान्यऽपश्चिमतेनोः प्रणुतानि माता,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥७॥

\* भाष \*

यमि सून्जि पाद गर्दि सूत्य मन मल लु हारान् ,

ब्रह्मा विष्णु तू शिव ह्री तिम पाद च्छारान् ।

पाश्चात् जन्म पुरष ह्री माता क्य नमान् ,

राज्ञा द्वह्य भगवती रुजिन प्रसन्न पाठ्य ॥७॥

यदर्शनामृतनदी

महदोचयुक्ता,

संसावयत्यखिलभेदगुहास्वऽनन्ता ।

तृष्णाहरा

सुकृतिनां

भवतापहर्त्री,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥८॥

\* भाष \*

अमृत वानि वरिथूय दर्शन नदी स्वयः

स्वय छय अनन्त विन-भाव ग्वफूनूय छय यूय सुय ।

सन्ताप त्रेष चद्वूनि सत पुरुषनय स्वय,

राज्ञा द्वहय भगवती रुज्ञेन प्रसन्न पाठ्य ॥८॥



यत्पादचिन्तन दिवाकररश्मिमाला,

चान्तर्वहिष्करणवर्गसरोजषण्डम् ।

ज्ञानोदये सति विकास्य तमोपहर्त्री,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

\* भाष \*

जूचू सूर्य सूजू हिममाल सुमरन छि यस पाद,

अन्ताहकर्ण-ब्रह्मषकर्ण पम्पोष डल पाद ।

बुज्जवान छय ज्ञान फूलवान गटकार चटान पाद,

राज्ञा द्वहय भगवती रूज्जिन प्रसन्न पाठ्य ॥६॥

हंसस्थिता सकल शब्दमयी भवानी,

वाग्वादिनी हृदय पुष्कर चारिणीया ।

हंसीव हंस रजनीश्वर वह्निनेत्रा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥७॥

\* भाष \*

हंसस खसिथ सकल शब्दमयी भवानी,

हृदयि कमलसूय मन्त्र वसान स्वय वाक्वानी ।

सूर्य चन्द्र अग्नि न्यत्रव स्वय हंसानी,

राज्ञा द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठ्य ॥७॥

यासोम सूर्य वपुषा सततं सरन्ती,

मूलाश्रयात्तडिदिवाऽऽविधिगन्ध्रमीदृया ।

मध्यास्थता सकल नाडिसमूह पूर्णा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥८॥

\* भाष \*

सूर्यचन्द्र रूप हिपज्जन व्वथितूय छय फेरान् ,

मूलाधार प्यटू ब्रह्म ब्रह्मरन्दस ताव् ।

मन्त्रभाग विहि छय सारिनूय नाडियन स्व पूरान् ,

राज्ञा द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठ्य ॥८॥

चैतन्य पूरित समस्त जगद्विचित्रा,

मातृ प्रमेयपरिमाणतया चकास्ति ।

या पूर्णवृत्त्यर्हामति स्वपदाधिरूढा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

\* भाष \*

चैतन्य जगत युसु छु जन रंगू रंगू वनानी,

ज्ञान ज्ञानवुन तू ज्ञाननी त्रयि किन्य व्रजानी ।

यस पूर्ण भाव अहं पद पननुय थवानी,

राज्ञी ब्रह्म भगवती रुजिन प्रसन्न पाक्य ॥६॥

(१५)

या चित्क्रमक्रमतया प्रविभाति नित्या,

स्वातन्त्र्य शक्तिरमला गतभेद भावा ।

स्वात्मस्वरूपमुविमर्शपरैः सुगम्या,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१०॥

\* भाष \*

कर्म-अकर्म च्यत शक्त युसू द्वह छय बासान् ,

विन भाव किन्य स्व निर्मल सुतन्त्रभाव सान ।

इम आत्म च्यनतन करान तिम छी लवान थान् ,

राज्ञा द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठ्य ॥१०॥



याकृत्य

पञ्चकनिभालनलालसैस्तैः,

सन्दृश्यते निखिल वेद्यगतापि शश्वत् ।

सान्तर्धृता

परप्रमातृपदं विशन्ती,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥११॥

**\* भाष \***

इमं छी लगिथ व्यमर्शस मन्त्र पञ्चकृतूकिस्,

प्रथ कुनि मनज बुद्धान न्हिस प्रथ कुनि बुद्धान न्हिस् ।

हुण्यार लय पद रटिथ स्वय शक्ति लय गुण त्रिस,

राज्ञा द्वहय भगवती रुजिन प्रसन्न पाठ्य ॥११॥

याऽनुत्तरात्मानं पदे परमाऽमृताब्धौ,

स्वातन्त्र्यशक्तिं लहरिवह्निः सरन्ती ।

संलीयते स्वरसतः स्वपदे सभावा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१२॥

\* भाष \*

पानि पान थानू पन्नने खसू व्वथि तिच्छूय जन् ,

यिथू व्वुथि तरन्ग अमृत सूत्य भरिथूय समन्द्रन ।

व्ययि सूत्य निवान छि सोरुय फीरिथ त्वतुय जन्,

राज्ञा द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठ्य ॥१२॥

मेरोः सदैवहिदरोषु विचित्रवाग्भिः,

गायान्ति या भगवतीं परिवादिनीभिः ।

विद्याधराहि पुलकाङ्कित विग्रहाः सा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१३॥

\* भाप \*

न्यती समीरच्यन ग्वफन नाना प्रकार गीत्,

ग्यवान छि च्ये भगवती सेंतार स्वर सूत्य ।

रुमू हर्ष सान व्यध्याधर गायन करान कूत्य,

राज्ञा द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठ्य ॥१३॥

राज्ञी सदा भगवती मनसा स्मरामि ॥

राज्ञी सदा भगवती वचसा गृणामि ॥

राज्ञी सदा भगवती शरसा नमामि ॥

राज्ञी सदा भगवती शरणं प्रपद्ये ॥१७॥

\* भाष \*

राज्ञा द्रव्य भगवती मन् किन्त्य स्वरान् ह्रुस ॥

राज्ञा द्रव्य भगवती व्यवि किन्त्य परान् ह्रुस ॥

राज्ञा द्रव्य भगवति कल किन्त्य नमान् ह्रुस ॥

राज्ञा द्रव्य भगवती आमुत शरणं ह्रुस ॥

राज्ञीः स्तोत्रमिदं पुण्यं यः पठेद्भक्तिमान्नरः

नित्यं दैव्याः प्रसादेन शिवसायुज्यमाप्नुयात् ॥

इति श्री जगदन्वास्तुति-राज्ञानक-विध्यावर विरचिता शुभदा

बोभूयात् ॥ ॥ इति शिवम् ॥

## कृतज्ञता

ज्ञात होवे कि श्री स्वामी विद्याधर जी महाराज विरचिता श्री राज्ञास्तुति की काश्मीरी भाषा में जो टीका श्री महादेवजी ने की है उसके अतिशुद्ध सेवक ने अपनी बुद्धि अनुसार काश्मीरी भाषा में अनुवाद किया है। जिसको देवनागरी भाषा में प्रकाशित किया।

इस कार्य में श्रीमान नील कण्ठ जी सेवक श्री स्वामी विद्याधर जी का मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। स्वामी जी के सेवकों और राज्ञा-भगवती प्रेमियों से आशा है कि अगर मेरी कोई त्रुटि रह गई हो तो क्षमा करें। (सपरू) १२-२-६५

शक्ति प्रिंटिंग प्रैस जम्मू में छपकर प्रकाशित की।